International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(1): 139-140
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-10-2021
Accepted: 22-12-2021

डॉ. जया शुक्ला
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. जया शुक्ला
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

आधुनिक संस्कृत साहित्य के अभिनव पुरोधा – आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल

डॉ. जया शुक्ला

प्रस्तावना

आधुनिक संस्कृत साहित्य के मध्य भारत के उद्भट विद्वान, वेद के प्रखर अध्येता, सहज एवं सरल व्यक्तित्व वाले आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल जी का जन्म 6 नवम्बर 1929 (सम्वत् 1986) में करवाचौथ को ग्राम बिरगुवॉ बुजुर्ग, तहसील–कोच, जिला–जालौन (उ0प्र0) में हुआ। चार वर्ष की बाल्यावस्था में पितृछाया से वंचित होने के बाद अपनी ताई एवं मॉ के कठोर अनुशासन में अपने अग्रज पं0 कृष्णलाल शास्त्री के निर्देशन में सर्वांगीण विकास किया। बाल्यकाल से ही कुशाग्र बुद्धि वाले शुक्ल जी अध्ययन के प्रति समर्पित थे। प्राईमरी, हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट के बाद कानपुर डी0ए0वी0 कॉलेज से बी0एस0सी0 (गणित) में स्नातक किया। तदन्तर विवाह एवं दतिया जिले के उनाव में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में शिक्षक पद का दायित्व ग्रहण किया। 1955 में यहीं आध्यात्मिक उर्वरा शक्ति की धरातल निर्मित होने लगी। श्री शुक्ल जी अध्यापन कार्य के बाद 17 कि0मी0 साईकिल यात्रा कर पीताम्बरा पीठ दतिया में पीठाधीश्वर स्वामी जी महाराज के सानिध्य, सत्संग, उपदेश श्रवण के लिए जाया करते थे। स्वामी जी के आदेश से ही एम0ए0 संस्कृत एवं साहित्याचार्य की परीक्षाएं उत्तीर्ण की। स्वामी जी के सानिध्य से ही श्री शुक्ल जी ज्ञान, अध्ययन–अध्यापन में परिष्कृत हो गए थे। फिर टीकमगढ़ (म0प्र0) में उनका स्थानान्तरण हुआ और वहीं वर्तमान में अभी तक अपने स्थायी निवास में आज भी ज्ञान चर्चाऐं कर जनों को उपकृत कर रहे हैं। श्री शुक्ल जी का व्यक्तित्व भारतीय वाड्.मय की तरह अनेक विधाओं से सम्पन्न है। साहित्यिक एवं शासकीय व्यस्तताओं के अनन्तर विज्ञान के व्याख्याता रहे श्री शुक्ल वेद व ब्राह्मणों की गोष्ठियों के साथ–साथ विज्ञान, खगोल विज्ञान आदि विषयों पर चर्चा करते रहे। कृतित्व सेवा निवृत्ति उपरान्त वेदाध्ययनए वेदांग का चिन्तन–मनन एवं लेखन कार्य जीवन के तीसरे दशक में पल्लवित हो रहा थाए वह फलित होकर प्रकाशित होकर अनेक साहित्य प्रेमियों के लिए ज्ञानार्जन का स्त्रोत बन गया। श्री शुक्ल जी द्वारा रचित ग्रन्थ इस प्रकार हैं–

1. **महर्षि अगस्त्य दृष्ट ऋग्वेद मन्त्र भाष्य–** इस ग्रन्थ की रचना के पीछे श्री शुक्ल जी का उद्देश्य रहा कि एक ऐसे ऋषि को प्रकाश में लाना जो कि ऋचा दृष्टा के साथ ही अपने हृदय में उनको आत्मसाक्षात् किए हुए थे। अगस्त ऋषि की ऋचाओं की व्याख्या वेदभाष्यकारों के परिप्रेक्ष्य में की, जो इनके महत्व, रहस्य को प्रकाशित करना चाहते थे। ऋग्वेद में महर्षि अगस्त्य के मंत्रो का भाष्य जो कि सूक्त क्रमांक 165 से 191 तक है।
2. **ब्रह्मवादिनी– दृष्ट मन्त्र भाष्य एवं अवदान–** इस ग्रन्थ की मुख्य विषेषता यह है कि 27 ऋषिकाओं के मन्त्रों की ऐसी विस्तृत व्याख्या जिसमें स्वरांकित मूल मंत्र, पदपाठ के साथ शब्दों के अर्थ, मन्त्र में व्यक्त विचारों की सुगम व्याख्या जो कि सभी को मूल भाव तक पहुॅचने के लिए प्रेरित करे। इस ग्रन्थ में वैदिक महिला–जीवन के यथार्थ की झलक मिलती है और भारत राष्ट्र की महिलाओं को समृद्ध, सुखी, शक्तिशाली एवं परिपूर्ण बनाने में प्रेरक व सक्षम है।
3. **ऋषि हयग्रीवकृत 'शाक्तदर्शनम्' एवं अगस्त्यकृत 'शक्तिसूत्रम्'–** इस ग्रन्थ में शैव अद्वैत सिद्धान्त की दृष्टि से इन शाक्त ग्रन्थों के शक्ति सूत्रों की व्याख्या की है एवं दोनों ग्रन्थों की विशेषताओं को दृष्टिगत कराया गया है। सिद्ध किया गया है कि शाक्त दर्शन एवं शक्ति तन्त्र दोनों ही ग्रन्थ कश्मीर क्रम दर्शन के सिद्धान्तों से प्रभावित उत्कृष्ट शाक्त तन्त्र ग्रन्थ हैं।
4. **बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्ति कोष–** इस ग्रन्थ में बुन्देली शब्दों का वर्तमान स्वरूप एवं उसके वैदिक एवं शास्त्रीय उद्भव से वर्तमान काल की यात्रा में शब्द पर भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्त के प्रभाव से हुए परिवर्तन का स्वरूप बताया गया है।
5. **मदन रस बरसे–** इस पुस्तक में बुन्देलखण्ड की संस्कृति पर निबन्ध लिखे हैं, जो बुन्देली में हैं और उनका अनुवाद हिन्दी में किया गया है।

इसमें एक ओर लोक जीवन में व्याप्त मान्यताओं का परिचय है वहीं दूसरी ओर पौराणिक ग्रन्थों में उनकी मान्यताओं की विशद जानकारी मिलती है। बुन्देलखण्ड की वन सम्पदा, पशु–पक्षी, प्रकृति–ऋतु, फल–फूल का सजीव वर्णन इन ललित निबंध संग्रह में है।

6. **महादेव–** इस ग्रन्थ में भारत भूमि में विद्यमान शिव की शक्ति व भारतीय संस्कृति की जड़ों में विद्यमान शिव महिमा का अद्भुत वर्णन किया है। शिव की विभिन्न मुद्राओं एवं आयुधों के निहितार्थ पर रचित पुस्तक अत्यन्त श्रेष्ठ, शिवविषयक समग्र जानकारियों से परिपूर्ण है। अतः यह पुस्तक भगवान शिव की महिमा, गरिमा से आपूरित है।
7. **चतुर्दष विद्यायें और चौसठ कलायें : अन्तर्सम्बन्ध–** यह पुस्तक प्रकाशाधीन है। चार वेद, छहवेदांग, चार उपांग इन चौदह विद्याओं को भारतीय वांग्मय में प्रामाणिक रूप से अंगीकृत किया है। इन विद्या की गणना के विषय में अनेक मनीषियों के अपने–अपने विचार हैं। श्रीमद्भागवत पुराण के टीकाकार आचार्य श्रीधर जी ने इनकी गणना चौंसठ मानी है, इसी पुस्तक को आधार रख कर चौंसठ विद्याओं का चौंसठ कलाओं के साथ अन्तर्सम्बन्ध पर विचार किया गया है। विद्या जहाँ समझ विकसित करती हैं वहीं कलाएं जीवन को दृष्टि देती हैं, सत्यम् शिवम् सुंदरम् से जीवन को समन्वित कर गति प्रदान करती है। समाज व संस्कृति के साथ कला का तालमेल जो कि प्राचीन काल में था, उनके बीज अथवा उस कला की जड़ें भारतीय वांग्मय की उन चौदह विद्याओं के साथ उनके अन्तः सम्बन्ध थे, यह प्रमाणित किया है।

निष्कर्ष :–

इस तरह श्री शुक्ल जी वर्तमान में भी निरंतर साहित्य सृजन में व्यस्त हैं। आधुनिक युग में भारतीय मनीषा का उत्कर्ष श्री शुक्ल जी में चरितार्थ है। 'नहिं मनुष्यात् श्रेष्ठतरं हि किंचित' मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ नहीं है यह महर्षि वेदव्यास कथन श्री शुक्ल जी पर सार्थक सिद्ध होती है। वाक्देवी की कृपा उन पर सदैव रही है। पुरातन सामग्री, विरासत को आपने सुव्यवस्थित कर सहज, सरल रूप से व्यक्त कर मानवता की सेवा की है, जन–जन का हित किया है। आपका ऐसा व्यक्तित्व–कृतित्व है जो लोक व शास्त्र दोनों पर ही अपनी लेखनी चलाने में निपुण है। लौकिक–संस्कृत, उनके विद्या–संस्कार एवं ज्ञान–प्राप्ति का मूलाधार है तो वहीं वैदिक–संस्कृत के वेद–मंत्रों का स्वर उनके श्रोत्रिय–वंश परम्परा से अनुगत बीज–रूप संस्कार है। आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल जी की दीर्घ सारस्वत जीवन–यात्रा उनके सतत् गहन गम्भीर अध्ययन, मनन एवं चिन्तन का सुपरिणाम है। श्री शुक्ल के साहित्यिक अवदान से यह सुनिश्चित हो जाता है कि आप भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन के सच्चे संवाहक हैं।

संदर्भ सूची

1. ऋषि हयग्रीवकृत 'शाक्तदर्शनम्' एवं अगस्त्यकृत 'शक्तिसूत्रम्', आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली
2. महर्षि अगस्त्य दृष्ट ऋग्वेद मन्त्र भाष्य, आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन
3. ब्रह्मवादिनी- दृष्ट मन्त्र भाष्य एवं अवदान, आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली
4. मदन रस बरसे, आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल
5. बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्ति कोष, आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, इंद्र पब्लिशिंग हाउस, भोपाल
6. लोक और वेद के अभिनव आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल ''लोके च वेदे च'', डॉ सरोज गुप्ता, पं. अरुण शुक्ल, जे. टी. एस. पब्लिकेशंस, दिल्ली